UTKARSH CLASSES

For Session 2022-23

RBSE

राजनीति विज्ञान

CLASS-XII

मॉडल पेपर्स

सॉल्यूशन सहित

RBSE द्वारा निर्धारित पाठ्यक्रम व ब्लूप्रिंट पर आधारित नवीनतम मॉडल पेपर

राजनीति विज्ञान (11)

MODEL PAPER (RBSE) 7

कक्षा-XII

समय : 3 घंटे 15 मिनट

पूर्णांक : 80

परीक्षार्थियों के लिए सामान्य निर्देश

1. परीक्षार्थी सर्वप्रथम अपने प्रश्न पत्र पर नामांक अनिवार्यत: लिखें।
2. सभी प्रश्न करने अनिवार्य हैं।
3. प्रत्येक प्रश्न का उत्तर दी गई उत्तर पुस्तिका में ही लिखें।
4. जिन प्रश्नों में आन्तरिक खण्ड हैं उन सभी के उत्तर एक साथ ही लिखें।

खण्ड-"अ"

1. बहुविकल्पी प्रश्न -

(i) जर्मनी का एकीकरण किस वर्ष किया गया? [1]

(अ) 1985 (ब) 1990
(स) 1991 (द) 1989

(ii) 'नगरनों काराबाख के लोग आर्मेनिया में मिलना चाहते थे' नगरनों काराबाख प्रांत का संबंध निम्नलिखित में से किस देश से है? [1]

(अ) अज़रबैजान (ब) तजिकिस्तान
(स) तुर्कमेनिस्तान (द) अफगानिस्तान

(iii) क्रोएशिया निम्नलिखित में से किस देश से अलग होकर एक स्वतंत्र देश बना? [1]

(अ) चेकोस्लोवाकिया (ब) तजिकिस्तान
(स) तुर्कमेनिस्तान (द) यूगोस्लाविया

(iv) दक्षेस के घोषणापत्र पर कब हस्ताक्षर किए गए थे? [1]

(अ) 1975 (ब) 1985
(स) 1995 (द) 2005

(v) सुरक्षा परिषद के अस्थाई सदस्य का चुनाव कितने वर्षों के लिए किया जाता है? [1]

(अ) 5 वर्ष (ब) 2 वर्ष
(स) 4 वर्ष (द) 3 वर्ष

(vi) 1990 के दशक में पूर्वी तिमोर पर किस देश ने हमला किया था? [1]

(अ) यूगोस्लाविया (ब) इंडोनेशिया
(स) मलेशिया (द) थाईलैंड

(vii) प्लुटार्को इलियास कैलस का संबंध निम्नलिखित में से किस राजनीतिक दल से है? [1]

(अ) सोशलिस्ट पार्टी (ब) भारतीय कम्युनिस्ट पार्टी
(स) भारतीय जनसंघ (द) पी आर आई

(viii) निम्नलिखित में से प्रथम पंचवर्षीय योजना का काल था [1]

(अ) 1951-56 (ब) 1952-57
(स) 1950-55 (द) 1947-52

(ix) बांग्लादेश के स्वतंत्रता संग्राम के नेता कौन थे? [1]

(अ) शेख मुजीबुर रहमान (ब) अयूब खान
(स) मुहम्मद अली जिन्ना (द) समीरुदौला खान

(x) सन् 1980 के आम चुनावों के पश्चात् केन्द्र में किस दल की सरकार बनी। [1]

(अ) जनता पार्टी की (ब) कांग्रेस पार्टी की
(स) जनसंघ की (द) कम्युनिस्ट पार्टी की

(xi) गोवा भारत संघ का एक राज्य किस वर्ष में बना। [1]

(अ) सन् 1984 में (ब) सन् 1985 में
(स) सन् 1986 में (द) सन् 1987 में।

(xii) 1989 में राष्ट्रीय मोर्चा के गठबंधन सरकार को किस पार्टी का बाहर से समर्थन प्राप्त था? [1]

(अ) कांग्रेस (ब) भारतीय जनता पार्टी
(स) समाजवादी पार्टी (द) जनता दल

2. रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए -

(i) सीमित परमाणु परिक्षण (LTBT) संधि पर अमेरिका, ब्रिटेन, सोवियत संघ ने _____ में 5 अगस्त 1963 को हस्ताक्षर किए तथा यह संधि 10 अक्टूबर 1963 को प्रभावी हुई। [1]

(ii) संयुक्त राष्ट्र सुरक्षा परिषद के स्थाई सदस्य _____ शक्ति संपन्न राष्ट्र है। [1]

(iii) दूसरी पंचवर्षीय योजना _____ पर आधारित थी तथा इस पंचवर्षीय योजना में उद्योगों को प्राथमिकता दी गई थी। [1]

(iv) 3 जुलाई, 1972 को इंदिरा गाँधी एंव जुल्फिकार अली भुट्टो के मध्य _____ हुआ। [1]

Utkarsh Classes & Edutech Pvt. Ltd.

(v) 25 जून, 1975 को दिल्ली के रामलीला मैदान में राष्ट्रव्यापी _____में घोषणा की गयी। [1]

(vi) गुजरात के गोधरा रेलवे स्टेशन पर अयोध्या से लौट रहे कार सेवकों को ट्रेन की बोगी में आग लगा कर जिंदा जला दिया गया इस घटना के विरोध में _____ में हिंदू-मुस्लिम दंगे भड़के। [1]

3. अतिलघूत्तरात्मक प्रश्न -

(i) 1980 के दशक के मध्य में सोवियत संघ की कम्युनिस्ट पार्टी के महासचिव कौन बने? [1]

(ii) सोवियत संघ की सेना ने अफगानिस्तान में कब हस्तक्षेप किया? [1]

(iii) सोवियत संघ में कम्युनिस्ट पार्टी ने कितने वर्षों तक एक दलीय प्रभुत्व कायम रखा? [1]

(iv) 'वारसा समझौते' का समापन कब हुआ? [1]

(v) अमेरिका ने 1999 में किस देश के खिलाफ सैनिक कार्यवाही की तथा क्यों? [1]

(vi) अमेरिका का रक्षा मुख्यालय कहाँ स्थित है? [1]

(vii) निम्नलिखित मै से कौन से देश अंटार्कटिका पर अपने प्रभुत्व का वैधानिक दावा करते हैं? [1]

(viii) विश्व में सबसे अधिक तेल भंडार किस देश में स्थित है? [1]

(ix) 1991 में भारत ने आर्थिक उदारीकरण की नीति को क्यों अपनाया? [1]

(x) राजनीतिक दलों से स्वतंत्र आंदोलन का अर्थ क्या है? [1]

(xi) नामदेव ढसाल ने 'सुरजमुखी आशिषों वाला फकीर' किसके लिए प्रयुक्त किया है? [1]

(xii) वैश्वीकरण में सहायक किन्हीं दो अंतर्राष्ट्रीय आर्थिक संगठनों के नाम लिखिए। [1]

खण्ड-"ब"

लघूत्तरात्मक प्रश्न - (उत्तर सीमा लगभग 50 शब्द)

4. वर्ष 2003 से अमेरिका के द्वारा इराक पर सैन्य हमले के दो मकसद बताएं। [2]

5. भारत और पाकिस्तान के मध्य विवाद के कोई दो मुद्दे बताएं। [2]

6. भारत की सुरक्षा रणनीति के कोई दो घटक बताएं। [2]

7. 'मूलवासी' से आप क्या समझते हैं? [2]

8. वैश्वीकरण में प्रौद्योगिकी का क्या योगदान है? [2]

9. भारत और भूटान के मध्य सहयोग के दो क्षेत्र बताएं। [2]

10. भारत की संयुक्त राष्ट्र की सुरक्षा परिषद की स्थाई सदस्यता के समर्थन में दो तर्क दीजिए। [2]

11. प्रथम आम चुनाव को सफल बनाने के लिए चुनाव आयोग के कोई दो कार्य बताएं। [2]

12. भारतीय राजनीति में 'दल-बदल' से आप क्या समझते हैं? [2]

13. 1960 के दशक को 'खतरनाक दशक' क्यों कहा जाता है? [2]

14. महिलाओं ने 'चिपको आंदोलन' में किस प्रकार सक्रिय भागीदारी निभाई, बताएं? [2]

15. भारत में पूर्वोत्तर के राज्यों में राजनीति में कौन से मुद्दे हावी रहे है? [2]

16. 'द्रविड आंदोलन' की प्रमुख मांगे कौनसी थीं? [2]

खण्ड-"स"

दीर्घउत्तरीय प्रश्न - (उत्तर सीमा लगभग 100 शब्द)

17. श्वेत क्रांति से क्या अभिप्राय है? [3]

18. 'स्वायत्त तिब्बत क्षेत्र विवाद' से आप क्या समझते हैं? [3]

19. शाह आयोग की नियुक्त कब की गई तथा शाह आयोग ने अपनी रिपोर्ट में क्या सुझाव दिया? [3]

20. अन्य पिछड़ा वर्ग का राजनीतिक उदय किस प्रकार हुआ? [3]

खण्ड-"द"

निबन्धात्मक प्रश्न - (उत्तर सीमा लगभग 250 शब्द)

21. अपरोध क्या है? इस सिद्धांत ने शीतयुद्ध को शस्त्र युद्ध में परिणत होने से कैसे रोका? [4]

अथवा

भारत की गुटनिरपेक्ष नीति सिद्धांतविहीन या अव्यावहारिक नीति थी? 'कथन' का मूल्यांकन कीजिए।

22. चीन के नेतृत्व में 1970 के दशक में जो महत्वपूर्ण नीतिगत निर्णय लिए गये वे क्या थे? [4]

अथवा

भारत – चीन संबंधों के आपसी विवादों के प्रमुख मुद्दों का उल्लेख करते हुए भारत – चीन संबंधों की व्याख्या कीजिए।

23. "भारत और पाकिस्तान का विभाजन अत्यन्त दर्दनाक था।" विभाजन के परिणामों का उल्लेख सविस्तार कीजिए। [4]

अथवा

भारत में राज्यों के पुनर्गठन पर एक निबन्ध लिखिए।

Utkarsh Classes & Edutech Pvt. Ltd.

उत्तरमाला मॉडल पेपर -07

खण्ड-"अ"

1. बहुविकल्पीय प्रश्न -

(i) [ब]
जर्मनी की दीवार 9 नवंबर 1989 को गिरा दी गई तथा अक्टूबर 1990 को जर्मनी का एकीकरण कर दिया।

(ii) [अ]
नगरनों काराबाख के लोग आर्मेनिया में मिलना चाहते थे। नगरनों काराबाख प्रांत अज़रबैजान में स्थित हैं।

(iii) [द]
युगोस्लाविया से पृथक होकर क्रोएशिया, स्लोवेनिया, बोस्निया - हर्जेगोविना अलग देश बने।

(iv) [ब]
दक्षिण एशिया के सात देशों ढाका (बांग्लादेश) में 1985 में दक्षेस घोषणा पत्र पर हस्ताक्षर किए।

(v) [ब]
सुरक्षा परिषद के 10 अस्थायी सदस्यों का चुनाव 2 वर्ष के लिए किया जाता है। कोई भी देश लगातार दो बार इसका सदस्य नहीं बन सकता।

(vi) [ब]
इण्डोनेशिया ने 1990 के दशक में पूर्वी तिमोर पर आक्रमण किया।

(vii) [द]
PRI पार्टी का गठन मैक्सिकों के स्वतंत्रता संग्राम के नेता प्लुटार्को इलियास कैलस द्वारा किया गया।

(viii) [अ]
प्रथम पंचवर्षीय योजना (1951-56), द्वितीय पंचवर्षीय योजना (1956-61), तीसरी पंचवर्षीय योजना (1961-66) तक चली।

(ix) [अ]
शेख मुजीर्बुर रहमान बांग्लादेश के स्वतंत्रता आंदोलन के नेता थे जिन्होंने आवामी लीग पार्टी का गठन किया था तथा बांग्लादेश के प्रथम शासनाध्यक्ष बने।

(x) [ब]
जनता पार्टी की सरकार 1980 में विघटित हुई तथा इंदिरा गांधी के नेतृत्व में एक बार पुन: कांग्रेस ने 1980 में अपनी सरकार बनाई।

(xi) [द]
गोवा पुर्तगाली उपनिवेश के अधीन था जिसे भारत सरकार ने सैनिक कार्यवाही से 1961 स्वतंत्र करवाया तथा 1987 भारत का राज्य बना।

(xii) [ब]
1989 में विश्वनाथ प्रताप सिंह राष्ट्रीय मोर्चा सरकार को भारतीय जनता पार्टी ने बाहर से समर्थन दिया।

2. रिक्त स्थान की पूर्ति -

(i) मास्को
(ii) वीटो
(iii) महालनोबिस मॉडल
(iv) शिमला समझौता
(v) सत्याग्रह
(vi) फरवरी-मार्च 2002

3. अतिलघूत्तरात्मक प्रश्न -

(i) मिखाइल गोर्बाचेव
(ii) 1979
(iii) 70 वर्ष
(iv) अक्टूबर 1989
(v) अमेरिका ने नाटो सेना के सहयोग से 1999 में यूगोस्लाविया पर सैनिक कार्यवाही की क्योकि यूगोस्लाविया ने अपने प्रांत कोसोवो पर सैनिक कार्यवाही की थी।
(vi) अमेरिकी रक्षा मुख्यालय वर्जिनिया के अर्लिगंटन में स्थित पेंटागन में है।
(vii) ब्रिटेन, फ्रांस, ऑस्ट्रेलिया, अर्जेंटीना, चिले, नॉर्वे, न्यूजीलैंड ये सभी देश अंटार्कटिका पर अपने प्रभुत्व का वैधानिक दावा करते हैं।
(viii) सऊदी अरब में विश्व के तेल का 1/4 हिस्सा है।
(ix) वित्तीय संकट से उबरने तथा आर्थिक वृद्धि की ऊँची दर प्राप्त करने के लिए।
(x) ऐसे आंदोलन जिनको किसी राजनीतिक दल द्वारा नेतृत्व प्राप्त नहीं होता। ऐसे आंदोलन 70-80 के दशक में प्रारंभ हुआ।
(xi) डॉ. बी आर अम्बेडकर के लिए।
(xii) अंर्तराष्ट्रीय मुद्रा कोष, विश्व व्यापार संगठन

खण्ड-"ब"

लघूत्तरात्मक प्रश्न -

4. 2003 के 19 मार्च को अमरीका ने 'ऑपरेशन इराकी फ्रीडम' के कूटनाम से इराक पर सैन्य-हमला किया जिसका मकसद था। (i) इराक के तेल-भंडार पर नियंत्रण (ii) इराक में अमरीका की मनपसंद सरकार कायम करना।

5. (i) जम्मू-कश्मीर विवाद (ii) आतंकवाद

6. सुरक्षा-नीति का पहला घटक रहा सैन्य-क्षमता को मजबूत करना क्योंकि भारत पर पड़ोसी देशों से हमले होते रहे हैं। भारत की सुरक्षा नीति का दूसरा घटक है अपने सुरक्षा हितों को बचाने के लिए अंतराष्ट्रीय कायदों और संस्थाओं को मजबूत करना।

7. संयुक्त राष्ट्रसंघ ने 1982 में मूलवासी शब्द की परिभाषा दी जिसके अनुसार मूलवासियों को ऐसे लोगों का वंशज बताया गया जो किसी मौजूदा देश में बहुत दिनों से रहते चले आ रहे थे। फिर किसी दूसरी

संस्कृति या जातीय मूल के लोग विश्व के दूसरे हिस्से से उस देश में आये और इन लोगों को अधीन बना लिया।

8. हालाँकि वैश्वीकरण के लिए कोई एक कारक जिम्मेवाद नहीं फिर भी प्रौद्योगिकी अपने आप में एक अपरिहार्य कारण साबित हुई है। इसमें कोई शक नहीं है कि टेलीग्राफ, टेलीफोन और माइक्रोचिप के नवीनतम आविष्कारों ने विश्व के विभिन्न भागों के बीच संचार की क्रांति कर दिखायी है।

9. भूटान से अपने काम का संचालन कर रहे पूर्वोत्तर भारत के उग्रवादियों और गुरिल्लों को भूटान ने अपने क्षेत्र से खदेड़ भगाया। भूटान के इस कदम से भारत को बड़ी मदद मिली है। भारत-भूटान में पनबिजली की बड़ी परियोजनाओं में हाथ बँटा रहा है। भारत-भूटान को सबसे अधिक अनुदान प्रदान करता है।

10. (i) भारत में दुनिया की जनसंख्या का 1/5 का हिस्सा निवास करता है। (ii) भारत दुनिया का सबसे सफल लोकतंत्रात्मक देश है।

11. (i) मतदाता सूचियाँ तैयार करवाना। (ii) निर्वाचन क्षेत्रों का सीमांकन करना।

12. कोई जनप्रतिनिधित्व किसी खास दल के चुनाव चिन्ह को लेकर चुनाव लड़े और और जीत जाए और चुनाव जीतने के बाद इस दल को छोड़कर किसी दूसरे दल में शामिल हो जाए, तो इसे दल-बदल कहते हैं। 1967 के आम चुनावों के बाद कांग्रेस को छोड़ने वाले विधायकों ने तीन राज्यों, हरियाणा, मध्यप्रदेश और उत्तरप्रदेश में गैर-कांग्रेसी सरकारों को बहाल करने में अहम भूमिका निभायी।

13. 1960 के दशक को खतरनाक दशक निम्न कारणों से कहा जाता है। (i) दस दशक में व्यापक सूखा, खेती की पैदावार में गिरावट, गंभीर खाद्यान्न संकट, विदेशी मुद्रा भंडार में कमी, सैन्य खर्चों में बढ़ोतरी ने देश की अर्थव्यवस्था को कमजोर कर दिया। (ii) समाजवादी व साम्यवादी पार्टियों ने जनता को एकजुट कर पूरे भारत में विरोध आंदोलन प्रांरभ किये जिससे राजनीतिक अस्थिरता उत्पन्न होने लगी।

14. चिपको आंदोलन में महिलाओं ने सक्रिय भागीदारी की। यह आंदोलन का एक नया पहलू था। इलाके में सक्रिय जंगल कटाई के ठेकेदार यहाँ के पुरूषों को शराब की आपूर्ति का भी व्यवसाय करते थे। महिलाओं ने शराब खोरी की लत के खिलाफ लगातार आवाज उठाई। इस आंदोलन का दायरा विस्तरित होने लगा तथा इसमें कुछ और सामाजिक मुद्दे भी जुड़ गये।

15. पूर्वोत्तर के राज्यों में राजनीति पर तीन मुद्दे हावी हैं - (i) स्वायत्ता की मांग (ii) अलगाववाद आंदोलन (iii) बाह्य लोगों का विरोध। स्वायत्ता की माँग 1970 के दशक में उठी तथा शेष मुद्दे 1980 के दशक में उठे।

16. द्रविड आंदोलन की पहली माँग थी, कि कल्लाकुडी नामक रेल्वे स्टेशन का नया नाम डालमियापुरम निरस्त किया जाये तथा स्टेशन का मूल नाम बहाल किया जाये। दूसरी माँग यह थी कि स्कूली पाठ्यक्रम तमिल संस्कृति के इतिहास को अधिक महत्व दिया जाये। तीसरी माँग राज्य सरकार के शिल्पकर शिक्षक कार्यक्रम को लेकर थी। संगठन के अनुसार यह नीति समाज में ब्राह्मणवादी दृष्टिकोण को बढ़ावा देती थी।

खण्ड-"स"

दीर्घउत्तरीय प्रश्न -

17. गुजरात के आनंद शहर से श्वेत क्रांति का प्रारंभ हुआ श्वेत क्रांति का जनक वर्गीज कुरियन 'मिल्क मैन ऑफ इंडिया' हो जाता है। ग्रामीण विकास और गरीबी उन्मूलन के लिहाज से 'अमूल' नाम का यह सहकारी आंदोलन अपने आप में एक अनूठा और कारगर मॉडल है। इस मॉडल के विस्तार को श्वेत क्रांति के नाम से जाना जाता है ।1970 में 'ऑपरेशन फ्लड' के नाम से एक ग्रामीण विकास कार्यक्रम शुरू हुआ था, ऑपरेशन फ्लड के अंतर्गत सहकारी दूध उत्पादकों को उत्पादन और विपणन के एक राष्ट्रव्यापी तंत्र से जोड़ा गया इस कार्यक्रम में डेयरी के काम को विकास के एक माध्यम के रूप में अपनाया गया ताकि ग्रामीण लोगों को रोजगार के अवसर प्राप्त हो उसकी आमदनी बढ़े तथा गरीबी दूर हो। ऑपरेशन फ्लड के माध्यम से भारत वर्तमान समय में दुग्ध निर्यातक देश बन चुका है।

18. चीने ने 1950 में तिब्बत पर अपना आधिपत्य स्थापित किया तथा उस ने तिब्बत को 'स्वायत्त क्षेत्र' बनाया है और इस इलाके को वह चीन का अभिन्न अंग मानता है। तिब्बती जनता चीन के इस दावे को नहीं मानती कि तिब्बत चीन का अभिन्न अंग है। अधिक संख्या में चीनी लोगों को तिब्बत लाकर वहाँ बसाने की चीन की नीति का तिब्बती जनता ने विरोध किया। तिब्बती चीन के इस दावे को भी अस्वीकार करते हैं कि तिब्बत को स्वायत्तता दी गयी है। वे मानते हैं कि तिब्बत की पारम्परिक संस्कृति और धर्म को नष्ट करके चीन वहाँ साम्यवाद फैलाना चाहता है।

19. शाह जाँच आयोग की नियुक्ति मई 1977 में जनता पार्टी की सरकार द्वारा की गयी। इस आयोग का मुख्य कार्य "25 जून 1975" के आपातकाल के दौरान सरकार द्वारा किए गए असंवैधानिक कार्यों एवं मानवाधिकार के हनन की जाँच करना था। जाँच आयोग ने इंदिरा गांधी द्वारा आपातकाल के दौरान उढाये गये अनेक कदमों को असंवैधानिक घोषित किया। भारत सरकार ने आयोग द्वारा प्रस्तुत दो अंतरिम रिपोर्टों एवं तीसरी व अन्तिम रिपोर्ट की सिफारिशों, पर्यवेक्षणों व निष्कर्षों को स्वीकार किया था।

20. 1980 के दशक में दलित जातियों के राजनीतिक संगठनों के ऊभार हुआ। 1978 में काशीराम के द्वारा 'बामसेफ' का गठन किया गया। इस संगठन ने अनुसूचित जाति, अनुसूचित जनजाति तथा अन्य पिछड़ा वर्ग के अल्पसंख्यकों की राजनीतिक सत्ता की तरफदारी की। 1984 में काशीराम ने ही बहुजन समाज पार्टी का गठन किया। बसपा ने प्रारंभ में पंजाब, हरियाणा व उत्तर प्रदेश में राजनीतिक सफलता हासिल की। धीरे-धीरे अन्य पिछड़ा वर्ग राजनीतिक रूप से एक प्रमुख मुद्दा बन गया। 1989 में गठित राष्ट्रीय मोर्चा सरकार ने ओबीसी के लिए 27% आरक्षण की घोषणा की। अन्य पिछडा वर्ग अथवा अदर बैकवर्ड क्लासेज अनुसूचित जाति तथा अनुसूचित जनजाति से अलग एक कोटि है जिसमें शैक्षणिक व सामाजिक रूप से पिछड़े समुदायों की गणना की जाती है। 1977 में जनता पार्टी की सरकार ने अन्य पिछड़ा वर्ग को आरक्षण प्रदान करने के लिए बी.पी. मंडल का आयोग (दूसरा पिछड़ा आयोग) का गठन किया।

खण्ड-"द"

निबन्धात्मक प्रश्न -

21. शीतयुद्ध शुरू होने के पीछे यह समझ भी काम कर रही थी कि परमाणु बम से होने वाले विध्वंस की मार झेलना किसी भी राष्ट्र के बूते की बात नहीं । यह एक सीधा-सादा लेकिन असरदार तर्क था । जब दोनों महाशक्तियों के पास इतनी क्षमता के परमाणु हथियार हो कि वे एक-दूसरे को असहनीय क्षति पहुँचा सकें तो ऐसे में दोनों के बीच रक्तरंजित युद्ध होने की संभावना कम रह जाती है। उकसावे के बावजूद कोई भी पक्ष युद्ध का जोखिम मोल लेना नहीं चाहेगा क्योंकि युद्ध से राजनीतिक फायदा चाहे किसी को भी हो, लेकिन इससे होने वाले विध्वंस को औचित्यपूर्ण नहीं ठहराया जा सकता। परमाणु युद्ध की सूरत में दोनों पक्षों को इतना नुकसान उठाना पड़ेगा कि उनमें से विजेता कौन है - यह तय करना भी असंभव होगा। अगर कोई अपने शत्रु पर आक्रमण करके उसके परमाणु हथियारों को नाकाम करने की कोशिश करता है तब भी दूसरे के पास उसे बर्बाद करने लायक हथियार बच जाएंगे। इसे 'अपरोध' (रोक और संतुलन) का तर्क कहा गया। दोनों ही पक्षों के पास एक-दूसरे के मुकाबले और परस्पर नुकसान पहुँचाने की इतनी क्षमता होती है कि कोई भी पक्ष युद्ध का खतरा नहीं उठाना चाहता। इस तरह, महाशक्तियों के बीच गहन प्रतिद्वन्द्विता होने के बावजूद शीतयुद्ध रक्तरंजित युद्ध का रूप नहीं ले सका। इसकी तासीर ठंडी रही । पारस्परिक 'अपरोध' की स्थिति ने युद्ध तो नहीं होने दिया, लेकिन यह स्थिति पारस्परिक प्रतिद्वन्द्विता को न रोक सकी।

शीतयुद्ध काल में दो महाशक्तियाँ और उनके अपने-अपने गुट थे। इन परस्पर प्रतिद्वंद्वी गुटों में शामिल देशों से अपेक्षा थी कि वे तर्कसंगत और जिम्मेदारी भरा व्यवहार करेंगे। इन देशों को एक विशेष अर्थ में तर्कसंगत और जिम्मेदारी भरा बरताव करना था। परस्पर विरोधी गुटों में शामिल देशों को समझना था कि आपसी युद्ध में जोखिम है क्योंकि संभव है कि इसकी वजह से दो महाशक्तियों के बीच युद्ध ठन जाए। जब दो महाशक्तियों और उनकी अगुआई वाले गुटों के बीच 'पारस्परिक अपरोध' का संबंध हो तो युद्ध लड़ना दोनों के लिए विध्वंसक साबित होगा। इस संदर्भ में जिम्मेदारी का मतलब था संयम से काम लेना और तीसरे विश्वयुद्ध के जोखिम से बचना। शीतयुद्ध ने समूची मनुष्य जाति पर मंडराते खतरे को जैसे-तैसे संभाल लिया।

अथवा

गुटनिरपेक्ष आंदोलन के नेता के रूप में शीतयुद्ध के दौर में भारत ने दो स्तरों पर अपनी भूमिका निभाई। एक स्तर पर भारत ने सजग और सचेत रूप से अपने को दोनों महाशक्तियों की खेमेबंदी से अलग रखा। दूसरे, भारत ने उपनिवेशों के चंगुल से मुक्त हुए नव-स्वतंत्र देशों के महाशक्तियों के खेमे में जाने का पुरजोर विरोध किया। भारत की नीति न तो नकारात्मक थी और न ही निष्क्रियता की। नेहरू ने विश्व को याद दिलाया कि गुटनिरपेक्षता कोई 'पलायन की नीति नहीं है। इसके विपरीत, भारत शीतयुद्धकालीन प्रतिद्वंदिता की जकड़ ढीली करने के लिए अंतर्राष्ट्रीय मामलों में सक्रिय रूप से हस्तक्षेप करने के पक्ष में था। भारत ने दोनों गुटों के बीच मौजूद मतभेदों को कम करने की कोशिश की और इस तरह उसने इन मतभेदों को पूर्णव्यापी युद्ध का रूप लेने से रोका। भारत के राजनायिकों और नेताओं का उपयोग अक्सर शीतयुद्ध कालीन प्रतिद्वंद्वियों के बीच संवाद कायम करने तथा मध्यस्थता करने के लिए हुआ; मिसाल के तौर पर 1950 के दशक के शुरुआती सालों में कोरिया युद्ध के दौरान। भारत की गुटनिरपेक्षता की नीति की कई कारणों से आलोचना की गई। हम यहाँ ऐसी दो आलोचनाओं की चर्चा करेंगे। आलोचकों का एक तर्क यह है कि भारत की गुटनिरपेक्षता 'सिद्धांतविहीन' है। कहा जाता है कि भारत अपने राष्ट्रीय हितों को साधने के नाम पर अक्सर महत्त्वपूर्ण अंतर्राष्ट्रीय मामलों पर कोई सुनिश्चित पक्ष लेने से बचता रहा। आलोचकों का दूसरा तर्क है कि भारत के व्यवहार में स्थिरता नहीं रही और कई बार भारत की स्थिति विरोधाभासी रही। महाशक्तियों के खेमों में शामिल होने पर दूसरे देशों की आलोचना करने वाले भारत ने स्वयं सन् 1971 के अगस्त में सोवियत संघ के साथ आपसी मित्रता की संधि पर हस्ताक्षर किए। विदेशी पर्यवेक्षकों ने इसे भारत का सोवियत खेमें में शामिल होना माना। भारत की सरकार का दृष्टिकोण यह था कि बांग्लादेश संकट के समय उसे राजनयिक और सैनिक सहायता की ज़रूरत थी और यह संधि उसे संयुक्त राज्य

अमरीका सहित अन्य देशों से अच्छे संबंध बनाने से नहीं रोकती। इस प्रकार भारत की गुटनिरपेक्ष नीति राष्ट्रीय हितों को पुरा करने पर आधारित थी। सिद्धांतविहीन या अव्यावहारिक नहीं।

22. चीनी नेतृत्व ने सन् 1970 के दशक में आर्थिक संकट से उबरने के लिए कुछ बड़े नीतिगत निर्णय लिए; जिनका विवरण निम्नलिखित है।

(i) संयुक्त राज्य अमेरिका से सम्बन्ध स्थापित करना - चीन ने अपने राजनीतिक एवं आर्थिक एकान्तवास को समाप्त करने के लिए सन् 1972 में संयुक्त राज्य अमेरिका से सम्बन्ध स्थापित किये।।

(ii) आधुनिकीकरण - सन् 1973 में तत्कालीन चीनी प्रधानमन्त्री चाऊ एन लाई ने कृषि, उद्योग, सेना, विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी के क्षेत्र में आधुनिकीकरण के चार प्रस्ताव रखे।

(iii) आर्थिक सुधारों एवं खुले द्वार की नीति - सन् 1978 में तत्कालीन चीनी नेता देंग श्याओपेंग ने चीन में आर्थिक सुधारों एवं 'खुले द्वार की नीति' की घोषणा की। अब नीति यह हो गयी है कि विदेशी पूँजी एवं प्रौद्योगिकी के निवेश से उच्चतर उत्पादकता को प्राप्त किया जाए। चीन सन् 2001 में विश्व व्यापार संगठन में भी सम्मिलित हो गया।

(iv) बाजार मूलक अर्थव्यवस्था को अपनाना - चीन ने अपने देश का आर्थिक विकास करने के लिए बाजारमूलक अर्थव्यवस्था को अपनाया। चीन ने बाजारमूलक अर्थव्यवस्था को अपनाने के लिए 'शॉक थेरेपी' पर अमल करने के बजाय अपनी अर्थव्यवस्था को चरणबद्ध ढंग से खोला। इस सम्बन्ध में सर्वप्रथम सन् 1982 में खेती का निजीकरण किया गया, तत्पश्चात् सन् 1998 में उद्योगों का निजीकरण किया गया तथा व्यापार सम्बन्धी अवरोधों को मात्र विशेष आर्थिक क्षेत्रों के लिए ही हटाया गया, जहाँ विदेशी निवेशक अपने उद्यम स्थापित कर सकते हैं।

नयी आर्थिक नीतियों के लाभकारी परिणाम - चीन में सन् 1970 के दशक के पश्चात् अपनायी गयी; नयी आर्थिक नीतियों के कारण चीनी अर्थव्यवस्था को अपनी गतिहीनता से उबरने में सहायता मिली। नई आर्थिक नीतियों के लाभकारी परिणाम निम्नलिखित हैं।

कृषि उत्पादों एवं ग्रामीण आय में वृद्धि - चीन में सन् 1982 में कृषि के निजीकरण के पश्चात् कृषि उत्पादों एवं ग्रामीण आय में उल्लेखनीय वृद्धि हुई है। ग्रामीण अर्थव्यवस्था में बचतों की मात्रा में वृद्धि हुई; जिससे ग्रामीण उद्योगों की मात्रा में तीव्र गति से वृद्धि हुई।

अर्थव्यवस्था की तीव्र वृद्धि दर - नई आर्थिक नीतियों के कारण उद्योग एवं कृषि दोनों ही क्षेत्रों में चीन की अर्थव्यवस्था की वृद्धि दर तीव्र रही। विदेशी व्यापार में उल्लेखनीय वृद्धि: चीन में व्यापार के नये कानूनों एवं विशेष आर्थिक क्षेत्रों के निर्माण से विदेशी व्यापार में उल्लेखनीय वृद्धि हुई।

प्रत्यक्ष विदेशी निवेश: नई आर्थिक नीतियों के कारण चीन सम्पूर्ण विश्व में प्रत्यक्ष विदेशी निवेश के लिए सबसे अधिक आकर्षक देश बनकर उभरा है। विदेशी मुद्रा का विशाल भण्डार: वर्तमान में चीन के पास विदेशी मुद्रा का विशाल भण्डार उपलब्ध है और इसी ताकत के आधार पर चीन दूसरे देशों में भी निवेश कर रहा है।

अथवा

भारत-चीन संबंधों का प्रारम्भ 'हिंदी-चीनी, भाई-भाई' के नारे के साथ हुआ। आज़ादी के तत्काल बाद 1950 में चीन द्वारा तिब्बत को हड़पने तथा भारत-चीन सीमा पर बस्तियाँ बनाने के फैसले से दोनों देशों के बीच संबंध एकदम गड़बड़ हो गए। भारत और चीन दोनों देश अरुणाचल प्रदेश के कुछ इलाकों और लद्दाख के अक्साई चिन क्षेत्र पर प्रतिस्पर्धी दावों के चलते 1962 में लड़ पड़े।

1962 के युद्ध में भारत को सैनिक पराजय झेलनी पड़ी और भारत-चीन सम्बन्धों पर इसका दीर्घकालिक असर हुआ। 1976 तक दोनों देशों के बीच कूटनैतिक संबंध समाप्त ही रहे। इसके बाद धीरे-धीरे दोनों के बीच सम्बन्धों में सुधार शुरू हुआ। 1970 के दशक के उत्तरार्द्ध में चीन का राजनीतिक नेतृत्व बदला। चीन की नीति में भी अब वैचारिक मुद्दों की जगह व्यावहारिक मुद्दे प्रमुख होते गए इसलिए चीन भारत के साथ संबंध सुधारने के लिए विवादास्पद मामलों को छोड़ने को तैयार हो गया। 1981 में सीमा विवादों को दूर करने के लिए वार्ताओं की श्रृंखला भी शुरू की गई।

दिसम्बर 1988 में राजीव गांधी द्वारा चीन का दौरा करने से भारत-चीन सम्बन्धों को सुधारने के प्रयासों को बढ़ावा मिला। इसके बाद से दोनों देशों ने टकराव टालने और सीमा पर शांति और यथास्थिति बनाए रखने के उपायों की शुरुआत की है। दोनों देशों ने सांस्कृतिक आदान-प्रदान, विज्ञान और तकनीक के क्षेत्र में परस्पर सहयोग और व्यापार के लिए सीमा पर चार पोस्ट खोलने के समझौते भी किए हैं। 1999 से भारत और चीन के बीच व्यापार 30 फीसदी सालाना की दर से बढ़ रहा है। इससे चीन के साथ संबंधों में नयी गर्मजोशी आयी है। चीन और भारत के बीच 1992 में 33 करोड़ 80 लाख डॉलर का द्विपक्षीय व्यापार हुआ था जो 2017 में बढ़कर 84 अरब डॉलर का हो चुका है। हाल में, दोनों देश ऐसे मसलों पर भी सहयोग करने के लिए राजी हुए हैं जिनसे दोनों के बीच विभेद पैदा हो सकते थे। जैसे विदेशों में ऊर्जा सौदा - हासिल करने का मसला।

वैश्विक धरातल पर भारत और चीन ने विश्व व्यापार संगठन जैसे अंतर्राष्ट्रीय आर्थिक संगठनों के नेता तथा अधिकारी अब अक्सर नयी दिल्ली और बीजिंग का दौरा करते हैं। इससे दोनों देश एक-

दूसरे को ज्यादा करीब से समझने लगे हैं। परिवहन और संचार मार्गों की बढ़ोत्तरी, समान आर्थिक हित तथा एक जैसे वैश्विक सरोकारों के कारण भारत और चीन के बीच संबंधों को ज्यादा सकारात्मक तथा मजबूत बनाने में मदद मिली है। हालांकि हाल के समय में दोनों देशों के बीच संबंधों में गिरावट आई है। इसके कारण सीमा विवाद, चीन-पाकिस्तान आर्थिक गलियारा और संयुक्त राष्ट्र में आतंकवाद विरोधी भारतीय प्रस्ताव के विरुद्ध चीन द्वारा पाकिस्तान को समर्थन देना आदि हैं।

23. भारत का विभाजन : 14 - 15 अगस्त, 1947 को एक नहीं बल्कि दो राष्ट्र भारत और पाकिस्तान अस्तित्व में आये। भारत और पाकिस्तान का विभाजन दर्दनाक था तथा इस पर फैसला करना और अमल में लाना और भी कठिन था।

भारत - विभाजन के परिणाम: भारत और पाकिस्तान विभाजन के निम्नलिखित परिणाम सामने आए:

(i) आबादी का स्थानान्तरण - भारत-पाकिस्तान विभाजन के बाद आबादी का स्थानान्तरण आकस्मिक, अनियोजित और त्रासदीपूर्ण था। मानव-इतिहास के अब तक ज्ञात सबसे बड़े स्थानान्तरणों में से यह एक था। धर्म के नाम पर एक समुदाय के लोगों ने दूसरे समुदाय के लोगों को अत्यन्त बेरहमी से मारा। जिन क्षेत्रों में अधिकतर हिन्दू अथवा सिख आबादी थी, उन क्षेत्रों में मुसलमानों ने जाना छोड़ दिया। ठीक इसी प्रकार मुस्लिम-बहुल आबादी वाले क्षेत्रों से हिन्दू और सिख भी नहीं गुजरते थे।

(ii) घर - परिवार छोड़ने के लिए विवश होना - विभाजन के फलस्वरूप लोग अपना घर छोड़ने के लिए मजबूर हो गए। दोनों ही तरफ के अल्पसंख्यक अपने घरों से भाग खड़े हुए तथा अक्सर अस्थाई तौर पर उन्हें शरणार्थी शिविरों में रहना पड़ा। वहाँ की स्थानीय सरकार व पुलिस इन लोगों से बेरुखी का बर्ताव कर रही थी। लोगों को सीमा के दूसरी तरफ जाना पड़ा और ऐसा उन्हें हर हाल में करना था, यहाँ तक कि लोगों ने पैदल चलकर यह दूरी तय की।

(iii) महिलाओं व बच्चों पर अत्याचार - विभाजन के फलस्वरूप सीमा के दोनों ओर हजारों की संख्या में औरतों को अगवा कर लिया गया। उन्हें जबर्दस्ती शादी करनी पड़ी तथा अगवा करने वाले का धर्म भी अपनाना पड़ा। कई परिवारों में तो खुद परिवार के लोगों ने अपने 'कुल की इज्जत' बचाने के नाम पर घर की बहू-बेटियों को मार डाला। बहुत से बच्चे अपने माता - पिता से बिछुड़ गए।

(iv) हिंसक अलगाववाद - विभाजन में सिर्फ सम्पत्ति, देनदारी और परिसम्पत्तियों का ही बँटवारा नहीं हुआ बल्कि इस विभाजन में दो समुदाय जो अब तक पड़ोसियों की तरह रहते थे, उनमें हिंसक अलगाववाद व्याप्त हो गया।

(v) भौतिक सम्पत्ति का बँटवारा - विभाजन के कारण 80 लाख लोगों को अपना घर छोड़कर सीमा पार जाना पड़ा तथा वित्तीय सम्पदा के साथ-साथ टेबिल, कुर्सी, टाइपराइटर और पुलिस के वाद्ययंत्रों तक का बँटवारा हुआ। सरकारी और रेलवे कर्मचारियों का भी बँटवारा हुआ। इस प्रकार साथ-साथ रहते आए दो समुदायों के बीच यह एक हिंसक और भयावह विभाजन था।

(vi) अल्पसंख्यकों की समस्या - विभाजन के समय सीमा के दोनों तरफ 'अल्पसंख्यक' थे। जिस जमीन पर वे और उनके पूर्वज सदियों तक रहते आए थे। उसी जमीन पर वे 'विदेशी' बन गए थे। जैसे ही देश का बँटवारा होने वाला था वैसे ही दोनों तरफ के अल्पसंख्यकों पर हमले होने लगे। इस कठिनाई से उबरने के लिए किसी के पास कोई योजना भी नहीं थी।

अथवा

भारत में राज्यों का पुनर्गठन - देश के विभाजन व देशी रियासतों के विलय के साथ ही राष्ट्र-निर्माण की प्रक्रिया का अंत नहीं हुआ। भारतीय प्रान्तों की आंतरिक सीमाओं को तय करने की चुनौती अभी सामने थी। यह केवल प्रशासनिक विभाजन सम्बन्धी मामला नहीं था। प्रान्तों की सीमाओं को इस प्रकार तय करने की चुनौती थी कि देश की भाषाई और सांस्कृतिक बहुलता की झलक मिले, साथ ही राष्ट्रीय एकता भी छिन्न-भिन्न न हो। सन् 1920 के नागपुर अधिवेशन में भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस ने मान लिया कि राज्यों का पुनर्गठन भाषाई आधार पर होगा।

राज्य पुनर्गठन आयोग का गठन - आन्ध्र प्रदेश के गठन के साथ ही देश के अन्य भागों में भी भाषाई आधार पर राज्यों को गठित करने का संघर्ष चल पड़ा। इन संघर्षों से मजबूर होकर केन्द्र सरकार ने सन् 1953 में राज्य पुनर्गठन आयोग बनाया। इस आयोग का प्रमुख कार्य राज्यों के सीमांकन के मामले पर कार्यवाही करना था। इसने अपनी रिपोर्ट में स्वीकार किया कि राज्यों की सीमाओं का निर्धारण वहाँ बोली जाने वाली भाषा के आधार पर होना चाहिए। इस आयोग की रिपोर्ट के आधार पर सन् 1956 में राज्य पुनर्गठन अधिनियम पारित हुआ। इस अधिनियम के आधार पर 14 राज्य और 6 केन्द्र-शासित प्रदेश बनाए गए। कुछ अन्य राज्यों का निर्माण क्षेत्रीय मांगों को मानना तथा भाषा के आधार पर राज्यों का गठन करना एक लोकतांत्रिक कदम के रूप में देखा गया।

भाषावार राज्यों को पुनर्गठित करने के सिद्धान्त को मान लेने का अर्थ यह नहीं था कि सभी राज्य तत्काल भाषाई राज्य में बदल जाएँ। एक प्रयोग द्विभाषी राज्य बम्बई के रूप में किया गया, जिसमें गुजराती और मराठी भाषा बोलने वाले लोग थे। एक जन

आन्दोलन के बाद सन् 1960 में महाराष्ट्र और गुजरात राज्य बनाए गए। पंजाब में भी हिन्दी भाषी और पंजाबी भाषी दो समुदाय थे। पंजाबी भाषी लोग अलग राज्य की मांग कर रहे थे। बाकी राज्यों की तरह उनकी माँग सन् 1956 में नहीं मानी गयी। सन् 1966 में पंजाबी भाषी इलाके को पंजाब राज्य का दर्जा दिया गया तथा वृहत्तर पंजाब से अलग करके हरियाणा व हिमाचल प्रदेश नाम के राज्य बनाए गए। सन् 1963 में नागालैंड को राज्य का दर्जा दिया गया। सन् 1972 में असम से अलग करके मेघालय बनाया गया। इसी वर्ष मणिपुर और त्रिपुरा भी अलग राज्य के रूप में अस्तित्व में आए। अरुणाचल प्रदेश व मिजोरम सन् 1987 में अस्तित्व में आए। राज्यों के पुनर्गठन में सिर्फ भाषा को आधार बनाया गया हो, ऐसी बात नहीं। बाद के वर्षों में अनेक उपक्षेत्रों ने अलग क्षेत्रीय संस्कृति अथवा विकास के मामले में क्षेत्रीय असंतुलन के प्रश्न खड़े कर अलग राज्य बनाने की मांग की। ऐसे तीन राज्य-झारखण्ड, छत्तीसगढ़ और उत्तरांचल (वर्तमान में उत्तराखण्ड) सन् 2000 में बने तथा 2014 में तेलंगाना को भी अलग राज्य बना दिया गया। राज्यों के पुनर्गठन को लेकर अभी भी देश के अनेक भागों में छोटे-छोटे अलग राज्य बनाने की माँग को लेकर आन्दोलन चल रहे हैं।

UTKARSH CLASSES

#अब कामयाबी पर होगा सबका हक़

UTKARSH CLASSES | CLASS 6-12
Smart e-Learning Programme

उत्कर्ष एप से घर बैठे कीजिए ऑनलाइन ट्यूशन और बनिए क्लास में टॉपर

उत्कर्ष एप में गुणवत्तामूलक स्कूली शिक्षा के ऑनलाइन कोर्सेस नाममात्र के शुल्क में उपलब्ध

QR Code Scan
कर आज ही
'उत्कर्ष एप'
डाउनलोड करें

Academic Session 2022-23

Class VI-VIII	~~₹10,000~~	₹1999	CBSE | RBSE & Other 7 State Boards
Class IX-X	~~₹15,000~~	₹2999	
Class XI-XII	~~₹18,000~~	₹3499	

₹1200/- per subject Live	₹600/- per subject Recorded

Class XI-XII
(Science, Commerce & Arts)

• **LIVE** & Recorded Classes • English & Hindi Medium

आज से ही बनाएँ अपनी पढ़ाई को और बेहतर
Utkarsh Online Tuition के साथ

उत्कर्ष एप ही क्यों ?

- विख्यात व अनुभवी विषय-विशेषज्ञों की टीम
- फैकल्टी द्वारा हस्तलिखित पैनल PDF & e-Notes
- नियमित टेस्ट द्वारा मूल्यांकन (MCQs & Self Assessment)
- टॉपिकवाइज़ क्विज़ एवं उनका वीडियो व्याख्यान
- Live Poll during interactive classes.
- 4K डिजिटल पैनल पर इंटरैक्टिव कक्षाएँ
- 360° Rapid Revision.

15 M+ SUBSCRIBERS
2 M+ SUBSCRIBERS
10 M+ DOWNLOADS
1 M+ FOLLOWERS

UTKARSH CLASSES

www.utkarsh.com support@utkarsh.com